डायट बुलेटिन

वाल्यूम – (i) संस्करण – (ii)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में मासिक पत्रिका 'डायट बुलेटिन' का विमोचन

बरेली। संस्थान के इतिहास में एक और नया अध्याय जोड़ते हुए डायट प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज, नोडल रिसर्च एंड इनोवेशन सेल डॉ० फेहमीना, समस्त डायट प्रवक्ताओं एवं मुख्य अतिथि श्री शांतनु कुमार, श्री राजीव कुमार, डॉ० रूचि जायसवाल, डॉ० वास्का आदि की गरिमामयी उपस्थिति में डायट की मासिक पत्रिका 'डायट बुलेटिन' का प्रकाशन किया गया। यह बुलेटिन संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों और रचनात्मकता का दर्पण है। सभी उपस्थित अतिथियों ने इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा की और पत्रिका के सफल व निरंतर प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

मासिक पत्रिका (डायट बुलेटिन) का विमोचन करती प्राचार्य, वरिष्ठ प्रवक्ता एवं मुख्य अतिथि ।

रचनात्मकता को मंच: 'डायट बुलेटिन' न केवल संस्थान की प्रगति को रेखांकित करेगी, बल्कि शिक्षकों, संकाय सदस्यों और प्रशिक्षुओं की मौलिक सोच, रचनात्मक लेखन और नवाचारों (Innovations) को एक सशक्त मंच प्रदान करेगी।

शैक्षणिक गतिविधियों का दर्पण: यह मासिक पत्रिका संस्थान द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न शैक्षणिक शोधों, प्रशिक्षणों, नवीन प्रयोगों और कार्यशालाओं का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ साबित होगी।

शिक्षा में जब तक नए प्रयोग और शोध नहीं होंगे, तब तक हम बदलते परिवेश के साथ तालमेल नहीं मिला सकते।मई माह में गठित 'रिसर्च एंड इनोवेशन क्लब' प्रशिक्षुओं को एक ऐसा सृजनात्मक मंच प्रदान करेगा, जहाँ वे अपने नवीन विचारों को व्यवहार में उतारते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक परिवर्तन के सहभागी बन सकेंगे। **प्राचार्य**

डायट फरीदपुर में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को किया गया नमन, प्रशिक्षुओं ने साझा किए विचार

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर, बरेली में महान कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती की पूर्व संध्या पर 'गुरुदेव को नमन' कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 02.06.2026 को प्रवक्ता श्रीमती अर्चना के मार्गदर्शन में किया गया । डीएलएड प्रशिक्षुओं ने अपने-अपने विचार साझा किए। कृतिका तिवारी ने मंच का संचालन किया।

मंच संचालन करती हुई डीएलएड प्रशिक्षु कृतिका तिवारी।

इस दौरान वर्ष 2024 बैच के प्रशिक्षुओं— अरबाब रज़ा ख़ां, सुप्रीत, हिमानी, आदर्श और नीतू ने गुरुदेव के जीवन, साहित्य और दर्शन पर अपने-अपने विचार साझा किए। इसके साथ ही प्रवक्ता श्री कृष्ण कुमार ने एक ऊर्जावान गीत प्रस्तुत किया तथा प्रवक्ता श्री सूर्य प्रताप ने अपने संबोधन में प्रशिक्षुओं को जीवन में अध्यात्म के महत्व व प्रासंगिकता से परिचित कराया। इस अवसर पर संस्थान के डीएलएड 2024-25, 2025-26 बैच के प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

डायट फरीदपुर में 'नशामुक्त भारत अभियान' के तहत जागरूकता कार्यक्रम, युवाओं ने ली नशे से दूर रहने की शपथ

बरेली । 29 जून 2026 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), फरीदपुर, बरेली के सभागार में 'नशामुक्त भारत अभियान' के अन्तर्गत "**स्वस्थ युवा, सशक्त भारत**" विषय पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम एवं विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। संस्थान की प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने अपने संदेश में कहा, "युवा देश का भविष्य हैं और एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उन्हें नशे जैसी सामाजिक बुराई से बचाना बेहद जरूरी है। हमारे प्रशिक्षणार्थी भविष्य के शिक्षक हैं, जो आगे चलकर स्कूलों में बच्चों को जागरूक करेंगे। शिक्षक समाज की वह धुरी हैं जो इस अभियान को जमीनी स्तर पर सफल बना सकते हैं।" कार्यक्रम की आयोजक श्रीमती सावित्री यादव ने बताया कि इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य युवाओं और भावी शिक्षकों को मादक पदार्थों के बढ़ते खतरों के प्रति सचेत करना है।

मुख्य वक्ताओं के विचार:

* डॉ. राही (मेडिकल ऑफिसर): मुख्य व्याख्याता डॉ. राही ने चिकित्सा दृष्टिकोण साझा करते हुए बताया कि मादक पदार्थों का सेवन से होने वाले गंभीर रोगों और उनके लक्षणों के बारे में विस्तार से समझाया।
* श्रीमती रूचि जायसवाल: मुख्य वक्ता रूचि जायसवाल ने किशोरावस्था के दौरान युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति के मनोवैज्ञानिक कारणों का विश्लेषण किया। उन्होंने इससे होने वाले स्वास्थ्य और सामाजिक दुष्परिणामों पर गहन चर्चा की।
* श्री मनोज कुमार (वरिष्ठ प्रवक्ता): उन्होंने नशामुक्त भारत अभियान में स्कूली शिक्षा की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक ही बच्चों को शुरुआती स्तर पर सही मार्गदर्शन देकर इस लत से बचा सकते है। कार्यक्रम के समापन पर सभागार में उपस्थित सभी प्रवक्ताओं, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं को जीवन भर मादक पदार्थों से दूर रहने और समाज को नशामुक्त बनाने की सामूहिक शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर डॉ. कृष्ण कुमार , श्री महेंद्र पाल, डॉ॰ फहमीना, सहित संस्थान के अन्य स्टाफ सदस्य और भारी संख्या में प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

डायट में 3346 पद हुए नियमित

लखनऊ। प्रदेश में सभी 70 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (डायट) के 3346 पदों को स्थायी कर दिया गया है। इससे इन पदों पर वर्षों से काम कर रहे अधिकारियों-कर्मचारियों को सेवा सुरक्षा मिल गई है। भविष्य में इनकी पदोन्नति भी हो सकेगी। इन संस्थानों के प्राचार्य, उप प्राचार्य व वरिष्ठ प्रवक्ता अब बीएसए व डीआईओएस जैसे समूह क और ख के पदों पर तैनाती भी पा सकेंगे। बेसिक व माध्यमिक शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव पार्थ सारथी सेन शर्मा ने इस संबंध में शासनादेश जारी कर दिया है। शासनादेश के अनुसार इन पदों को 2 अगस्त 2016 से प्रभावी मानते हुए स्थायी पदों में परिवर्तित करने की मंजूरी दी गई है। साथ ही इन पदों पर कार्यरत कर्मचारियों को शासन द्वारा समय-समय पर स्वीकृत महंगाई भत्ता व अन्य भत्तों का लाभपूर्ववत मिलता रहेगा। डायट में वर्ष 1989 से 3346 पदों पर अस्थायी तैनाती थी। इनकी नियुक्ति का हर साल नवीनीकरण होता था। स्थायीकरण होने से से यहां पर सालों से अस्थायी रूप से कार्य कर रहे शिक्षकों व कर्मचारियों को सेवा सुरक्षा मिलेगी।

(स्त्रोत–अमर उजाला)
18.06.2026

प्रशिक्षुओं ने नोटिस बोर्ड पर 'सुरक्षित पर्यावरण, समृद्ध स्वास्थ्य' का संदेश दर्शाया तथा कलात्मक सोच के रंग बिखेरे

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में पर्यावरण चेतना को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष जागरूकता गतिविधि का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान के **शोध एवं नवाचार क्लब के सदस्यों द्वारा डॉ .फ़हमीना के निर्देशन में** "सुरक्षित पर्यावरण, समृद्ध स्वास्थ्यविषय पर " आधारित एक बेहद आकर्षक और ज्ञानवर्धक नोटिस बोर्ड तैयार किया गया। सदस्यों ने अपनी रचनात्मक सोच और लेखन कला के माध्यम से नोटिस बोर्ड पर यह संदेश दिया कि एक समृद्ध और स्वस्थ मानव जीवन पूरी तरह से सुरक्षित व स्वच्छ पर्यावरण पर निर्भर करता है। बोर्ड पर स्लोगन, कविताओं और चित्रों के जरिए सिंगल यूज प्लास्टिक के बहिष्कार, जल संरक्षण और अधिक से अधिक पौधरोपण करने की आवश्यकता को खूबसूरती से रेखांकित किया गया।

डायट फरीदपुर में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन पर कार्यशाला आयोजित, प्रशिक्षुओं को किया जागरूक

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) फरीदपुर, बरेली में मासिक धर्म स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन को लेकर एक विशेष कार्यशाला का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ डायट प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया, जबकि मंच का कुशल संचालन श्री कृष्ण कुमार द्वारा किया गया। मुख्य वक्ताओं ने साझा किए विचार कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों ने डीएलएड (D.El.Ed.) प्रशिक्षुओं को इस विषय पर विस्तार से जागरूक किया: डॉ रूचि जायसवाल ने माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए समाज में इसके प्रति जागरूकता की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ वास्का ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में बेहतर स्वास्थ्य आदतों को अपनाने और किसी भी प्रकार के संकोच को छोड़कर जागरूक रहने की अपील की। श्री शांतनु कुमार साहू ने महिला स्वास्थ्य की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महिला स्वास्थ्य और स्वच्छता प्रबंधन की भूमिका सबसे अहम है।

कार्यक्रम में मौजूद डायट प्राचार्य, वरिष्ठ प्रवक्ता मुख्य अतिथि एवं प्रशिक्षु।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का संदेश: डायट फरीदपुर, बरेली में आयोजित मासिक धर्म स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, मुख्य प्रवक्ता एवं संस्थान के प्रवक्तागण।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित, 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान पर हुई चर्चा

बरेली, 5 जून। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर, बरेली में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक भव्य पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ श्रीमती प्राचार्य द्वारा संस्थान परिसर में पौधरोपण करके किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री ऋषि ठाकुर उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न महत्वपूर्ण आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने *"Back to Nature"* (प्रकृति की ओर लौटें) और *"Mission LiFE"* (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) की अवधारणा को समझाते हुए कहा कि आधुनिक जीवनशैली के कारण प्रकृति से बढ़ती दूरी ही आज की बड़ी पर्यावरणीय समस्याओं की वजह है। ऐसे में प्रकृति के साथ संतुलन बनाना बेहद जरूरी है। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान की उत्पत्ति एवं उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह अभियान

पर्यावरण के प्रति जागरूक करते क्षेत्रीय वन अधिकारी।

मुख्य अतिथि ने 'Mission LiFE' और 'Back to Nature' पर दिया जोर

वृक्षारोपण को मातृत्व, संवेदनाओं और प्रकृति संरक्षण से जोड़ने का एक प्रयास है, जिससे अधिक से अधिक लोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ सकें। कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व तथा सतत विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। अंत में प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ। इस अवसर पर संस्थान के प्रवक्ता व प्रशिक्षु मौजूद रहे।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रशिक्षु ।

कला के रंग, प्रकृति के संग: डायट फरीदपुर में विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता के दौरान अपनी कलात्मक सोच से सुंदर पोस्टर बनाते डीएलएड के प्रशिक्षु।

डायट फरीदपुर में विश्व पर्यावरण दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित, भावना रानी के ग्रुप ने मारी बाजी

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में प्रवक्ता डॉ. रूबी के नेतृत्व में एक भव्य पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें डीएलएड (D.El.Ed.) सत्र 2024-25 और 2025-26 के प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और कला के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। प्रतियोगियों के मूल्यांकन के लिए संस्थान के प्रवक्ताओं का एक पैनल गठित किया गया था, जिसमें मुख्य रूप से प्रवक्ता श्री कृष्ण कुमार, प्रवक्ता महेंद्र पाल, प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा, प्रवक्ता श्री विनोद उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर सभी विजेताओं को बधाई दी गई और उन्हें प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया।

- ***कला के माध्यम से पर्यावरण संदेश : प्रथम स्थान पर भावना रानी ग्रुप, द्वितीय स्थान मुस्कान गुप्ता, तृतीय स्थान सादिया नूर एवं ग्रुप।***

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बरेली, 12 जून। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। संस्थान के प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा के कुशल निर्देशन में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रवक्ताओं और प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

बाल दिवस पर अपने विचार रखते प्रवक्ता एवं प्रशिक्षु ।

इस वर्ष की थीम **"Red Card to Child Labour: Fair Play for Children, Decent Work for Adults"** पर केंद्रित इस कार्यक्रम में बाल श्रम उन्मूलन और बच्चों के शिक्षा के अधिकार पर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम में संस्थान के प्रवक्ताओं सहित बड़ी संख्या में भावी शिक्षक मौजूद रहे: प्रवक्ता श्री विनोद, प्रवक्ता श्री महेंद्र पाल , प्रवक्ता डॉ फेहमीना, प्रवक्ता श्री राजेश, प्रवक्ता श्रीमती अर्चना, प्रवक्ता श्रीमती सावित्री एवं सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षु। समापन सत्र में प्रवक्ता श्री दिनेश एवं प्रवक्ता श्री कृष्ण कुमार ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए बाल श्रम के विरुद्ध समाज को जागरूक करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा, *"प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, सुरक्षा और एक सम्मानपूर्ण बचपन मिलना उसका मौलिक अधिकार है।"* इसी संकल्प के साथ कार्यक्रम का गरिमापूर्ण समापन हुआ।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली में नेत्रदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

बरेली । जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में दिनांक 11.06.2026 को प्रशिक्षुओं में मानवीय व सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु 'नेत्रदान जागरूकता कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य सूत्रधार एवं प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा ने मंच का कुशल संचालन करते हुए नेत्रदान के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने इससे जुड़े चिकित्सकीय व व्यावहारिक तथ्यों को साझा किया और प्रशिक्षुओं को समाज से भ्रांतियां दूर करने के लिए प्रेरित किया। उनके द्वारा बताया गया कि उनके पिता डॉ विष्णु प्रकाश मिश्रा जी द्वारा भी देहदान तथा नेत्रदान किया गया प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा ने बताया की किस प्रकार नेत्रदान करने वाला व्यक्ति नेत्र दान कर सकता

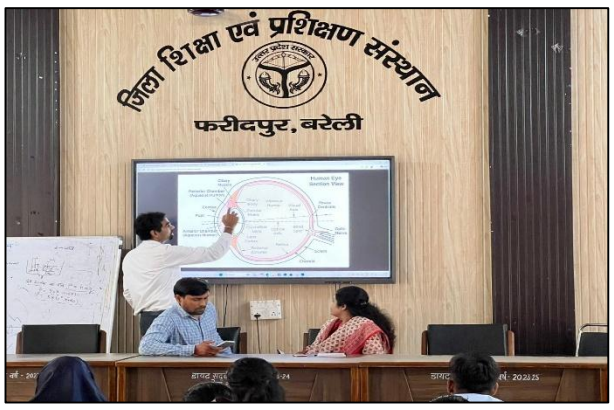

प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा चित्र के माध्यम से समझाते हुए।

व्यक्ति नेत्रदान करने का इच्छुक है तो उसको चाहिए अपने नजदीकी आई बैंक जाए और नेत्रदान वाले फॉर्म को भरे और अपने परिवार को इस विषय में सूचित करे की उसके मरणोपरांत आई बैंक बालों से संपर्क करें जिससे दान करने वाले व्यक्ति का नेत्रदान हो सके। प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा ने चित्र के माध्यम से प्रशिक्षुओं को यह भी बताया की नेत्र का कौनसा हिस्सा दान किया जाता है, बताया की नेत्र का एक पारदर्शी भाग जिसे कॉर्निया के नाम से जाना जाता है उस हिस्से को मृत व्यक्ति के 6 से 7 घंटे के अंदर उसको अलग करके स्टोर कर लिया जाता है जिससे वह जरूरतमंद व्यक्ति के लिए उपयोग में लाया जा सके।

आपकी एक पहल, किसी के जीवन में भर सकती है रंगों का सवेरा। आइए इस मुहिम से जुड़ें और नेत्रदान का संकल्प लेकर किसी की अंधेरी दुनिया को रोशन करें।

इस अवसर पर प्रवक्ता डॉ० फ़हमीना, प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार सिंह , प्रवक्ता श्री महेंद्र पाल एवं प्रवक्ता श्री विनोद कुमार उपस्थित रहे। प्रवक्ता श्री महेंद्र एवं प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार ने अपने संक्षिप्त व प्रेरक संबोधन में परोपकार के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है, इसलिए सामाजिक चेतना के इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाने में भावी प्रशिक्षुओं की भूमिका अग्रणी होनी चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली में 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

बरेली । जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली में 21 जून को 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरे उत्साह और अनुशासन के साथ मनाया गया। कार्यक्रम प्रातः 6:00 बजे संस्थान परिसर में प्रारंभ हुआ, जिसमें योग के प्रति जागरूकता और स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दिया गया। इस अवसर पर संस्थान की प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज, प्रवक्तागण श्री दिनेश, डॉ० सपना तिवारी, श्री विनोद, डॉ० फहमीना, श्रीमती आकांक्षा, श्रीमती अर्चना, श्रीमती सावित्री, श्री सूर्य प्रताप, श्री राजेश, श्री महेंद्र, लिपिक स्टाफ श्रीमती अदिति, श्रीमती अंशु, श्रीमती पारुल, श्रीमती रश्मि एवं चतुर्थ श्रेणी स्टाफ तथा डीएलएड 2024 और 2025 बैच के प्रशिक्षु उपस्थित रहे। योग सत्र का संचालन प्रवक्ता डॉ. सपना तिवारी ने किया। उन्होंने सूक्ष्म व्यायाम से शुरुआत कर अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी प्राणायाम और ताड़ासन, वृक्षासन, वज्रासन जैसे विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराया। साथ ही योग के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के बारे में विस्तार से बताया।

11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास करते डायट फरीदपुर के प्रशिक्षु एवं स्टाफ ।

डायट फरीदपुर में सजी Learner Identity Wall: प्रशिक्षुओं ने दीवार पर उकेरे अपने सपने और लक्ष्य

बरेली । जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में प्रशिक्षुओं की व्यक्तिगत पहचान, रचनात्मकता और उनके सपनों को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से एक अनूठी पहल की गई। संस्थान परिसर में "Learner Identity Wall – हर प्रशिक्षु की पहचान दीवार" नामक एक विशेष गतिविधि का शानदार आयोजन किया गया।

इस रचनात्मक गतिविधि में डीएलएड 2024 और 2025 बैच के प्रशिक्षुओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक प्रशिक्षु ने अपनी एक आकर्षक प्रोफाइल आधारित प्रस्तुति तैयार की। इन प्रोफाइल्स में प्रशिक्षुओं ने अपनी तस्वीर के साथ-साथ अपनी रुचियों, शक्तियों, सपनों और भविष्य के लक्ष्यों का सुंदर विवरण प्रस्तुत किया। इन सभी प्रस्तुतियों को संस्थान की एक दीवार पर बेहद व्यवस्थित और कलात्मक ढंग से सजाया गया, जिससे यह दीवार प्रशिक्षुओं की अभिव्यक्ति का केंद्र बन गई । प्रशिक्षुओं की इस आत्म-अभिव्यक्ति और शानदार प्रस्तुति की सभी ने प्रशंसा की। प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि, इस प्रकार की व्यावहारिक और रचनात्मक गतिविधियां प्रशिक्षुओं के भीतर छिपे आत्मविश्वास को जगाने और उनके संवाद कौशल (Communication Skills) को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उपस्थित सभी प्रवक्ताओं ने भी भावी शिक्षकों (प्रशिक्षुओं) के इस प्रयास की जमकर तारीफ की और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए निरंतर आगे बढ़ने हेतु उनका उत्साहवर्धन किया।

Learner Identity Wall का अवलोकन करती प्राचार्य एवं प्रवक्ता गण ।

पहचान से ही बनता है आत्मविश्वास, और आत्मविश्वास से तय होता है कामयाबी का सफर ! *डायट फरीदपुर में 'Learner Identity Wall' के मंच पर डीएलएड 2024 और 2025 बैच के प्रशिक्षुओं ने बिखरने दिए अपनी रचनात्मकता के रंग।*

आसमान में भी सुराख हो सकता है,एक पत्थर तो शिद्दत से उछालो यारो: डॉ लक्ष्मी शुक्ल SRG बरेली

बरेली । सुबह का समय था। प्रवेश उत्सव के दौरान उच्च प्राथमिक विद्यालय कुंवरपुर बंजरिया, ब्लॉक बिथरी चैनपुर, जनपद बरेली जाने का अवसर मिला। सामान्यतः किसी विद्यालय में प्रवेश करते समय हम भवन, कक्षाएं या व्यवस्थाएँ देखते हैं, लेकिन इस विद्यालय में प्रवेश करते ही सबसे पहले जो महसूस हुआ, वह था— एक जीवंत ऊर्जा। बच्चों की मुस्कान, दीवारों पर सीखने को प्रेरित करते चित्र, सुव्यवस्थित परिसर और हर कोने में दिखाई देता अपनापन।

मन में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था— आखिर यह सब संभव कैसे हुआ?

कुछ समय बाद पुनः सपोर्टिव सुपरविजन हेतु विद्यालय पहुँची। इस बार केवल अवलोकन नहीं, बल्कि उस सोच को समझने की उत्सुकता थी जिसने इस विद्यालय को विशेष बना दिया। विद्यालय का हर कोना जैसे अपनी अलग कहानी कह रहा था।

कार्यालय में प्रवेश करते ही नजर डॉ. विनय कुमार जी (इंचार्ज अध्यापक) के पास रखे एक बैग पर पड़ी। सामान्य सा दिखने वाला वह बैग वास्तव में उनकी कार्यशैली का परिचय था। उसमें शिक्षण की पूर्व तैयारी हेतु लिखी डायरी, विज्ञान की पुस्तकें, विभागीय रजिस्टर, स्टेशनरी और शिक्षण सामग्री सुव्यवस्थित ढंग से रखी हुई थी। उसी क्षण आदरणीय पूर्व महानिदेशक सर की बात याद आ गई—"हर शिक्षक के पास अपना कॉम्पीडियम होना चाहिए, जिसमें शिक्षण की आवश्यकता की सभी सामग्री उपलब्ध हो।"

यह देखकर महसूस हुआ कि कुछ लोग केवल निर्देश नहीं सुनते, बल्कि उन्हें अपने जीवन और कार्यशैली का हिस्सा बना लेते हैं।

विद्यालय में आगे बढ़ते ही बच्चों की मुस्कान और पौधों की हरियाली ने ध्यान आकर्षित किया। इको क्लब के अंतर्गत विकसित औषधीय गार्डन, इको क्लब गार्डन और सिद्धार्थ उपवन केवल सजावट नहीं थे। बच्चे वहाँ पौधों के बीच बैठकर चर्चा कर रहे थे, उन्हें पहचान रहे थे, उनके उपयोग समझ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति स्वयं बच्चों की शिक्षिका बन गई हो। वहाँ बैठकर बच्चों से बातचीत करते समय महसूस हुआ कि सीखना केवल किताबों तक सीमित नहीं है, वह जीवन से जुड़ने की प्रक्रिया है। विद्यालय की लाइब्रेरी ने तो मन को विशेष रूप से छू लिया। सीमित स्थान के बावजूद अपने संसाधनों से तैयार की गई यह लाइब्रेरी ज्ञान और संवेदनशीलता का अद्भुत संगम थी। बीच में रखा पुराने गिरे हुए पेड़ का तना जैसे कोई संदेश दे रहा हो। वह तना केवल लकड़ी का टुकड़ा नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान और संवेदना का प्रतीक लग रहा है

विद्यालय निरीक्षण करती SRG I

जब विज्ञान कक्ष में पहुँची तो वहाँ बच्चों की रचनात्मकता जीवंत दिखाई दी। हर मॉडल, हर TLM केवल सजावट नहीं था, बल्कि बच्चों की मेहनत और सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा था। डॉ. विनय जी ने बताया कि सभी TLM Learning Outcomes से mapped हैं और अधिकांश बच्चों के सहयोग से तैयार किए गए हैं। सबसे सुखद बात यह लगी कि यह नवाचार केवल विज्ञान विषय तक सीमित नहीं था। गणित, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत, उर्दू— प्रत्येक विषय के शिक्षक बच्चों को सरल और रोचक तरीके से पढ़ाने हेतु स्वयं TLM तैयार कर रहे थे। विद्यालय में अभिलेखीकरण की व्यवस्था भी अत्यंत प्रभावशाली थी। प्रत्येक गतिविधि का रिकॉर्ड, गतिविधि आधारित शिक्षण की योजनाएँ, बच्चों का डॉक्यूमेंटेशन सब कुछ इतनी व्यवस्थित व्यवस्थित ढंग से रखा गया था कि यह स्पष्ट दिखाई देता था कि यहाँ कार्य केवल पूरा नहीं किया जाता, बल्कि सोच-समझकर किया जाता है। एक रजिस्टर में प्रत्येक बच्चे की सम्पूर्ण जानकारी संकलित थी, जिससे किसी भी आवश्यकता के समय तुरंत सहायता मिल सके। दीवारों पर सजे फोटो एलबम विद्यालय की यात्रा की कहानी कह रहे थे। संघर्ष से लेकर उपलब्धियों तक का हर चरण वहाँ संजोया गया था। सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं की सूची बच्चों के चेहरे पर गर्व और आत्मविश्वास दोनों ला रही थी। उपचारात्मक शिक्षण, प्री-टेस्ट और आवश्यकता आधारित सहयोग यह बता रहे थे कि यहाँ हर बच्चे को सीखने का अवसर देने का वास्तविक प्रयास किया जा रहा है।सबसे विशेष बात यह लगी कि विद्यालय में कोई भी कार्यक्रम अचानक नहीं होता। हर गतिविधि की तैयारी पहले से की जाती है, बच्चों को जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं और उन्हें सहभागी बनाया जाता है। शायद यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक कार्यक्रम केवल आयोजन नहीं, बल्कि सीखने का उत्सव बन जाता है।वापस लौटते समय मन में एक संतोष था। यह विद्यालय केवल ईंट और दीवारों का भवन नहीं, बल्कि एक शिक्षक के सपनों, मेहनत, संवेदनशीलता और नवाचार की जीवंत तस्वीर है। वास्तव में डॉ. विनय कुमार जी यह सिद्ध करते हैं कि यदि शिक्षक ठान ले, तो सीमित संसाधनों में भी शिक्षा का ऐसा वातावरण तैयार किया जा सकता है जो बच्चों के भविष्य को नई दिशा दे सके। उच्च प्राथमिक विद्यालय कुंवरपुर बंजरिया केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि पूरे ब्लॉक के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केंद्र है।

Healing is not just about recovery of the body, but also the restoration of the mind and soul.

Accidents are unexpected life events that not only cause physical injuries but also leave a deep emotional and psychological impact on individuals. While physical wounds may heal with time, the trauma experienced after an accident often stays longer and affects a person's mental well-being, confidence, and daily functioning.

Post-traumatic stress after accidents can appear in many forms such as fear, anxiety, sleeplessness, flashbacks, emotional instability, or even withdrawal from social life. In such situations, timely psychological counselling plays a crucial role in recovery and rehabilitation.

The counselling process begins with creating a safe and supportive environment where the survivor feels heard and understood without judgment. Trained counsellors or psychologists first assess the emotional state of the patient and identify the level of trauma. This is followed by therapeutic communication, where the individual is encouraged to express their feelings and fears openly.

Gradually, various evidence-based techniques such as Cognitive Behavioral Therapy (CBT), relaxation exercises, breathing techniques, and stress management strategies are introduced. In some cases, family counselling is also recommended so that the patient receives emotional support from their close environment, which significantly speeds up recovery.

The goal of trauma counselling is not only to reduce symptoms but also to help individuals regain confidence, rebuild their normal lifestyle, and restore emotional strength. With proper guidance, patience, and care, most individuals are able to recover and return to a healthy and productive life.

At Being Alive Foundation, we strongly believe that mental health is as important as physical health. Every trauma survivor deserves compassion, care, and professional support to heal completely and live a dignified life again.

"Healing is not just about recovery of the body, but also the restoration of the mind and soul."

Dr. Sabeen Ahsan

- Post-Trauma Counselling After Accidents: A Path Towards Healing and Hope
- President, Being Alive Foundation
- Chairperson, Vinayak International School
- Founder, Being Alive Charitable Healthcare Centre

Creative thinking is the need of the hour

For generations, teachers have acknowledged students for giving the right answers. Today, there is a need to prepare students to ask the right questions. The schools and universities prepare students for the future. But, the troubling reality is that still many educational institutes continue to prioritize memorization over imagination. Students are often trained to reproduce information rather than challenge assumptions, explore alternatives, or create something new. But the reality is that the world they are being prepared to enter demands precisely those abilities.

The rise of artificial intelligence has made this issue even more urgent. AI can retrieve information in seconds. The question arises what will make human beings more relevant in the workplace? The answer lies in the human capacity to think creatively and critically, adapt to change, and solve problems that have no textbook solutions.

Research continues to reinforce this argument. Studies have shown that students develop stronger creative thinking skills when they engage in authentic learning experiences that require them to apply knowledge to real-world situations (Karunarathne & Calma, 2023). Even research highlights that the benefits of interdisciplinary learning, project-based activities, and innovative teaching approaches that encourage originality and flexibility in thinking (Samaniego et al., 2024).

But perhaps the strongest argument for the necessity of creative thinking in teaching and learning is not found in research papers. It is found in our day to day lives. School environment change will not be solved by memorized formulas alone. Socio-Economic inequality will not disappear because someone scored really high in their class test. The next breakthroughs in science, maths, medicine, technology, societal environment and public policy will come from a student's willingness to challenge conventional wisdom and imagine possibilities that others overlook. Innovation is believed to begin where conventional thinking ends.

Unfortunately, it is usually observed that creativity is a luxury rather than a necessity. It is frequently associated with art, music, or literature while being overlooked in science, mathematics, and other disciplines. This perception needs to be challenged. Creativity is not just confined to the arts; it is the motivational force behind every scientific discovery, entrepreneurial ventures, and social progress. Every field advances because someone dares to think differently.

Teacher's therefore have an immense responsibility. They must create learning environments where curiosity is rewarded, where failure is viewed as part of the learning process, and where students are encouraged to experiment without fear of making mistakes. The classroom should not be a place where ideas are merely received; it should be a place where ideas are created.

The question is no longer whether creative thinking belongs in the teaching and learning system. But the real question is whether education can remain relevant without it. The future will not belong to those who simply know more. It will belong to those who can imagine more. If our schools fail to nurture that ability, they risk preparing students for a world that no longer exists.

Dr. Fehmina
Lecturer (District Institute Of Education & Training)
Faridpur, Bareilly

गागर में सागर थे डैडी

श्री श्रीकांत मिश्रा (प्रवक्ता)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बरेली

खूब खेल खिलाते थे डैडी,
गाड़ी, रेल दिलाते थे डैडी।
हम सब की नैया खेने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

बचपन से लगते थे विशाल,
ताकत की जैसे हों मिसाल।
निर्भय थे हम, हर हालत में,
जब पास हमारे थे डैडी।

हम सब की नैया खेलने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

कभी प्रेम दिखा, कभी डांट डपट,
कभी चीज दिला, कभी बहला कर।
सही मार्ग पर हमको लाने को,
हर राह दिखाते थे डैडी।

हम सब की नैया खेने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

दुनियादारी - रिश्तेदारी,
हर त्यौहार, शादी की खरीदारी।
बचपन की जिद,अभिलाषा पूरी करने को,
गागर में सागर थे डैडी।

हम सब की नैया खेलने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

ईमानदार निर्भीक रहे,
हर बंधन से वह मुक्त रहे।
दानी थे, सामाजिक, अच्छे शिक्षक भी,
निर्लिप्तता की मिसाल थे डैडी।

हम सब की नैया खेलने को
पतवार चलाते थे डैडी।

आनंदित, वर्तमान में जीते थे,
सबकी उपलब्धियों पर खुश होते थे।
जीवन का हर पल खूब जिया,
अंत समय भी मृत्युंजय थे डैडी।

हम सब की नैया खेलने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

वह रहे नहीं, पर अब भी हैं,
पहले सदेह, अब मन में है।
जीवन में कब, क्या, कैसे करना है,
खुद करके सिखला गए डैडी।

हम सब की नैया खेलने को,
पतवार चलाते थे डैडी।

कविताएँ/लेख/चित्र

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा लिखी गई कविताएँ/लेख या उनके द्वारा खीचे गए फोटो।

आत्मविश्वास

दिन मे सूरज है, अगर
तो रात को भी चाँद तारें है।
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं,
जो कभी हारे है।

कभी धूप कभी वारिश,
ये तो कुदरत के नजारे है।
पर प्यासे तो वो लोग भी है,
जो समुद्र के किनारे है।

कुछ न कर सके तो कहते है,
हम तो किस्मत के मारे है।
पर जान न सके तुम खुद को,
कि कितने रूप तुम्हारे है?

हिम्मत और हौसला हो अगर,
तो रास्ते कई सारें है।
पर जीत तो वे लोग भी सकते है,
जो कभी हारे है है।

काजल
डी.एल.एड. प्रशिक्षु 2025

मैं हार नहीं मानूंगी क्योंकि मेरा विजय होना तय है तोता मैंना और कोयल की आवाज हम

मैं प्रयास कर कर रही हूँ, धीरे-धीर ही सही पर मैं रोज आगे बढ़ रही हूँ मैंने कठिन परिस्थियों में भी कभी रुकना नहीं सीखा समय विपरीत होने पर मैंने कभी झुकना नहीं सीखा कि मेहनत के पंख से मैं पर्वत को चढ़ रही हैं धीरे-धीरे ही सही पर में रोज आंगे बढ़ रही हूँ कि मन भी विचलित होता है जब लोग ताने सुनाते हैं यह संघर्ष का समय है अभी राहो में मेरे सिर्फ पत्थर आते है कि मैं उन्हीं पत्थरों को अपने कलम के धीरे ही सही हथियारों से गढ़ रही हूँ धीरे-धीर पर में रोज आगे बढ रही है कि मौन मेरा साथी होगा जब तक संघर्ष का समय है मैं हार नहीं मानूंगी क्योंकि मेरा विजय होना तय है कि मैं अपनी असफलताओं पर सबकी बातो को सह रही हूँ देखो में थोड़ा ही सही पर रोज आगे बढ़ रही हूँ।

नीतू गुप्ता
डी.एल.एड प्रशिक्षु 2024

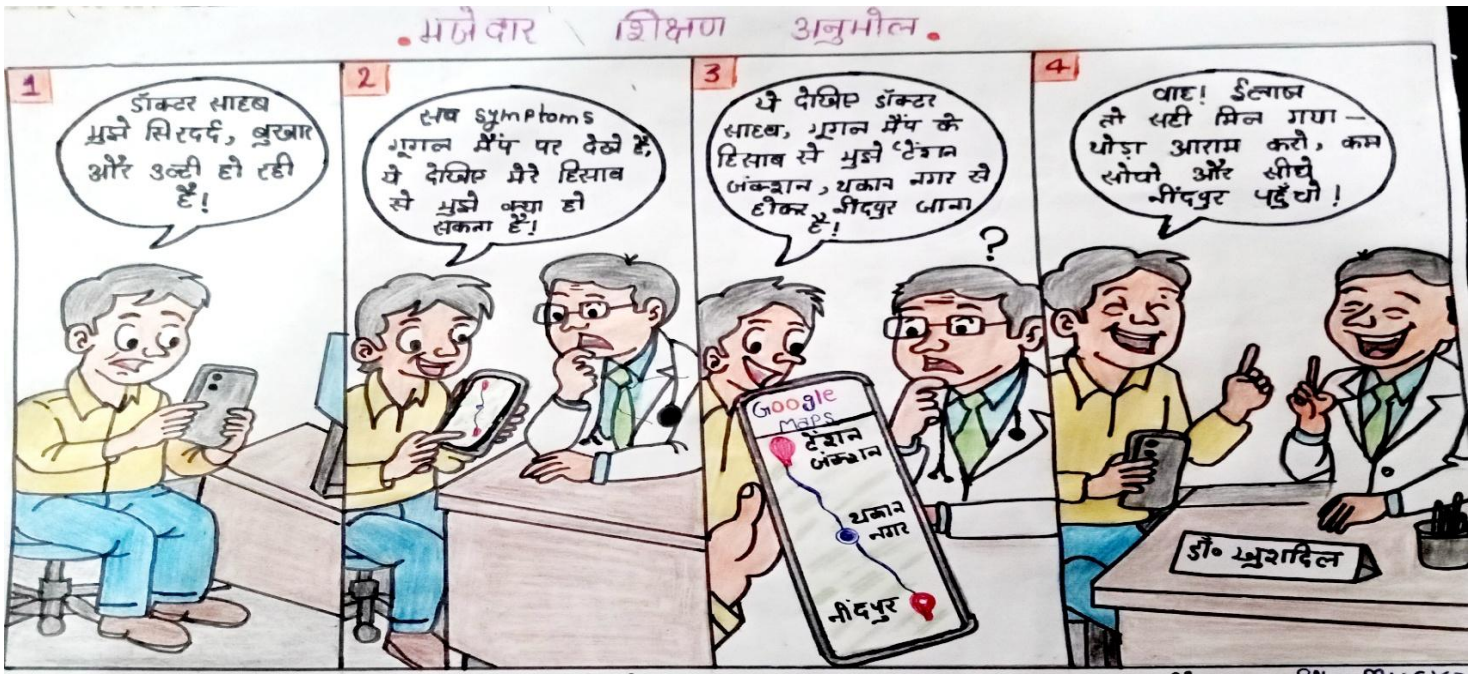

मुस्कान डी.एल.एड 2025 ।

मेरा बचपन

कितना प्यारा सा पावन वो बचपन रहा,
दादी नानी के आँचल वो बचपन रहा।
चल पड़े हम जिधर बस वही थी डगर,
ऐसा चंचल मधुर मेरा बचपन रहा।
धूल में खेल कर खुद को सब रंग लिया,
देखकर अंबा को घुटनों बल भग लिया।
मिट्टी की धूल खुश्बू सा बचपन रहा,
ऐसा चंचल मधुर मेरा बचपन रहा।
काली रातों का सुंदर थे भी चाँद हम,
तोता मैंना और कोयल की आवाज हम।
हर सुबह गीत गजलो - सा बचपन रहा,
ऐसा चंचल मधुर मेरा बचपन रहा।

भीम प्रकाश (प्रशिक्षु)
डी.एल.एड. (2023)

घंटा घर (Clock Tower) जोधपुर

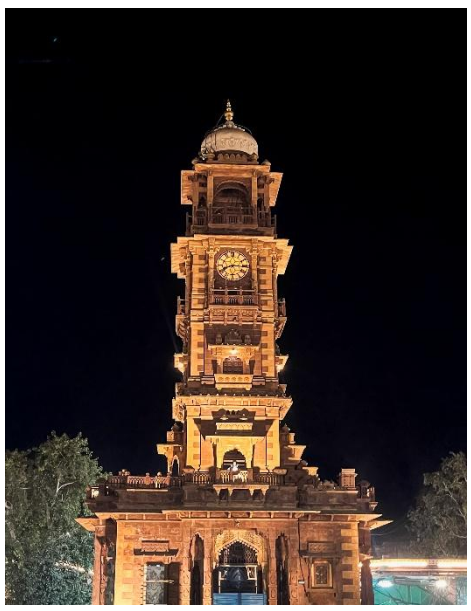

घंटा घर, जोधपुर राजस्थान फोटो।

राजस्थान। जोधपुर का यह प्रतिष्ठित घंटा घर एक प्रमुख ऐतिहासिक लैंडमार्क है। रात के समय, इसकी भव्य रोशनी इसे शहर का एक आकर्षक केंद्र बनाती है।

कविता सिंह
डी.एल.एड 2025

आमेर का किला (Amer Fort) जयपुर

राजस्थान। जयपुर से करीब 11 किमी की दूरी पर अरावली पहाडी की चोटी पर स्थित आमेर का किला राजस्थान के महत्वपूर्ण एवं सबसे विशाल किलों में से एक है।यह किला अपनी अद्भुत वास्तुकला और शानदार संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है। यह राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।यह किला राजस्थानी कला और संस्कृति का बेहतरीन उदाहरण है। इसे बनने में करीब **100 साल** लगे थे। यह किला यूनस्को की विश्व धरोहर में शामिल है। आमेर किलो को बनाने का श्रेय **राजा मान सिंह** को जाता है, हालांकि इसकी शुरूआत राजा काकिल देव ने 11वीं सदी में की थी। कले में **शीश महल या मिरर पैलेस** भी है। किले की दीवारों और छतों पर हिंदू–देवताओं की नक्काशी की गई है। किले में गणेश पोल, सुख मंदिर जैसी कई खास संरचनाएं है.किले में एक **भूल–भूलैया** भी है। इसके आकर्षक डिजाइन और भव्यता को देखते हुए इस किले को विश्व विरासत की सूची में शामिल किया गया है। राजस्थान के प्रमुख पुरात्वविदों में से एक अमेर किले का निमार्ण राजा मान सिहं ने कराया था। यह हिन्दू कला समृद्ध इतिहास एवं भव्य स्थात्य कला का नायाब नमूना है।

अरबाब रज़ा खां डी.एल.एड 2025

कविताएँ/लेख/चित्र

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा लिखे गए लेख ।

अल्बर्ट हॉल संग्रहालय जयपुर

बुद्ध की प्रतिमा।

राजस्थान। यह बुद्ध की 'भूमि स्पर्श मुद्रा' में एक सुंदर प्रतिमा है। यह शांति और ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक है, जो अल्बर्ट हॉल संग्रहालय के समृद्ध सांस्कृतिक और कलात्मक संग्रह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कविता सिंह
डी.एल.एड 2025

काकापो तोता

काकापो दुनिया का सबसे भारी तोता है - यह काई जैसे हरे रंग का उल्लू जैसे चेहरे वाला पक्षी है जिसका आकार एक छोटे कुत्ते जितना होता है, यह उड़ नहीं सकता, 90 साल तक जीवित रह सकता है, और केवल हर 2 से 4 साल में प्रजनन करता है जब न्यूजीलैंड के रिमू के पेड़ इसकी इच्छा को जगाते हैं।

चूहे / बिल्लियाँ / नेवले / मनुष्य जंगलों को साफ कर रहे हैं। काकापो कभी भी इनमें से किसी से भी आगे निकलने के लिए विकसित नहीं हुआ।

1995 तक केवल 51 पक्षी बचे थे। वैज्ञानिकों पर्वतारोहियों और नई ताहू - माओरी लोग जो इस पक्षी को हमेशा से ताओंगा, एक खजाना मानते आए हैं ने सभी बचे हुए पक्षियों को शिकारी-मुक्त द्वीपों पर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया। प्रत्येक पक्षी को एक ट्रांसमीटर लगाया गया। प्रत्येक घोंसले पर चौबीसों घंटे

ए-आई द्वारा काकापो तोते की फोटो ।

निगरानी रखी गई। बीते साल 14 फरवरी को, चार साल बाद पहली बार काकापो का बच्चा पैदा हुआ। उसका नाम तिविरी रखा गया। वसंत तक, 59 बच्चे पैदा हो चुके थे। 236 पक्षी। सभी के नाम ज्ञात हैं। हर घोंसले पर नजर रखी जाती है।

आयुषी गौतम
डी.एल.एड 2025

अगले अंक हेतु आमंत्रण

प्रिय पाठकगण,

DIET मासिक बुलेटिन के आगामी अंक के लिए आपकी रचनाओं एवं योगदानों का स्वागत है। आप अपने लेख, कविता, लघु कहानी, अनुभव, पुस्तक समीक्षा, शैक्षिक विचार, नवाचार, चित्रकला, फोटोग्राफ तथा संस्थान की गतिविधियों से संबंधित सामग्री भेज सकते हैं।

चयनित प्रविष्टियों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। अपनी प्रविष्टियाँ निर्धारित तिथि तक संपादकीय दल को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। आइए, अपने विचारों, रचनात्मकता और नवाचारों को साझा करें तथा इस बुलेटिन को ज्ञान, शिक्षा, नवाचार और प्रेरणा का सशक्त मंच बनाएं।

संपादकीय मंडल
DIET मासिक बुलेटिन

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले नारी शिक्षा और अधिकार की प्रणेता

सावित्रीबाई फुले (जन्म 3 जनवरी, 1831, नाइगांव वर्तमान महाराष्ट्र राज्य, भारत - मृत्यु 10 मार्च, 1897, पूना वर्तमान पुणे) एक समाज सुधारक और भारत में महिलाओं की शिक्षा की अग्रणी थीं। वे भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में से एक थीं और उन्होंने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए कई स्कूल खोले। उन्होंने सत्यशोधक समाज ("सत्य की खोज करने वालों का समाज") में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसकी स्थापना ज्योतिराव फुले ने 1873 में सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए की थी। फुले दंपति ने मिलकर जातिगत ऊँच-नीच और भेदभाव को चुनौती दी। सावित्रीबाई फुले को अक्सर भारत में महिला सशक्तिकरण और नारीवाद के लिए एक आदर्श के रूप में उद्धृत किया जाता है।

फुले का जन्म भारत में बॉम्बे प्रेसीडेंसी (वर्तमान में महाराष्ट्र राज्य) के नाइगांव नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। उस समय के रिवाज़ के अनुसार, नौ वर्ष की आयु में उनका विवाह ज्योतिराव फुले से हो गया और वे उनके साथ रहने के लिए पूना (वर्तमान में पुणे) चली गईं। ज्योतिराव फुले स्वयं उस समय बच्चे थे और उन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर ली थी। वे अपनी पत्नी के सीखने के उत्साह से प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया। इसके बाद सावित्रीबाई फुले ने अहमदनगर (वर्तमान में अहिल्यानगर) और पूना में ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित संस्थानों में शिक्षिका बनने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे 1847 में एक योग्य शिक्षिका बन गईं।

1848 में ज्योतिराव और सावित्रीबाई फुले ने पुणे के भिडेवाड़ा में निम्न जाति की लड़कियों के लिए एक अग्रणी विद्यालय खोला, जिसमें छह लड़कियां उनकी पहली छात्राएं थीं। उन्होंने 1849 में वयस्कों के लिए एक विद्यालय शुरू किया और सभी जातियों के विद्यार्थियों को प्रवेश दिया। उनके इस कार्य का समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर रूढ़िवादी ब्राह्मणों द्वारा व्यापक विरोध किया गया, जो जातिगत व्यवस्था में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं चाहते थे। उन्हें अक्सर मौखिक रूप से गाली दी जाती थी और विद्यालय जाते समय उन पर पत्थर, मिट्टी और गोबर फेंका जाता था। उन्होंने विद्यालय में बदलने के लिए अपने साथ एक अतिरिक्त साड़ी रखना शुरू कर दिया। 1849 में उनके ससुर ने उन्हें और उनके पति को घर छोड़ने के लिए कहा, क्योंकि उनका मानना था कि निचली जातियों को सशक्त बनाना ब्राह्मणों की नज़र में पाप है। स्कूलों में छात्रों के स्कूल छोड़ने की दर को कम करने के लिए, उन्होंने छात्राओं को छात्रवृत्ति देना

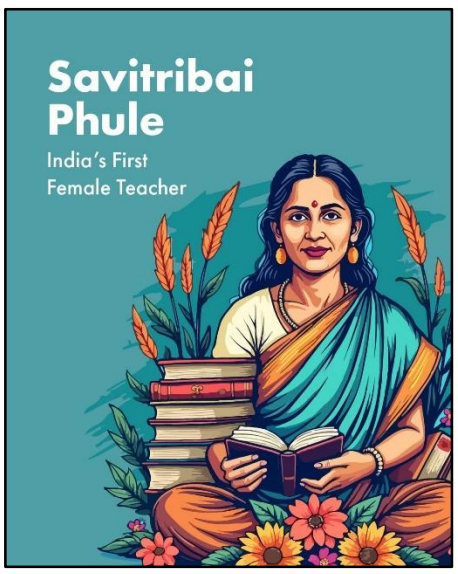

ए-आई द्वारा सावित्रीबाई फुले की फोटो ।

शुरू किया। 1851 तक फुले परिवार तीन स्कूल चला रहा था जिनमें बॉम्बे प्रेसीडेंसी की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका घोषित किया गया । 150 से अधिक छात्राएँ पढ़ रही थीं। उन्होंने पुणे क्षेत्र में लड़कियों के लिए कुल 18 स्कूल खोले। 1852 में ब्रिटिश सरकार द्वारा सावित्रीबाई फुले को बॉम्बे प्रेसीडेंसी की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका घोषित किया गया। 1854 में फुले ने विधवाओं के लिए एक आश्रय गृह खोला (हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति देने वाला कानून 1856 में पारित हुआ)। 1864 में उन्होंने विधवाओं, बेसहारा महिलाओं और परिवारों द्वारा त्यागी गई बाल वधुओं के लिए एक बड़ा आश्रय गृह बनवाया और उन्हें शिक्षा प्रदान की। उन्होंने बाल विवाह, शिशुहत्या और सती प्रथा (विधवा द्वारा अपने मृत पति की चिता पर स्वयं को जला देना 1829 में समाप्त कर दी गई लेकिन फुले के समय में अभी भी प्रचलित थी) के विरुद्ध अभियान चलाया। चूंकि निचली जातियों को गाँव के आम कुएँ का उपयोग करने की मनाही थी, इसलिए फुले और उनके पति ने उनके लिए अपने घर के पीछे एक कुआँ खुदवाया। इस कदम से उस समय काफी हंगामा हुआ था। 1874 में उन्होंने एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र यशवंत राव को गोद लिया, जिसने उनके आश्रय गृह में बच्चे को जन्म दिया था। वह आगे चलकर डॉक्टर बने।

फुले ने अपने पति द्वारा 1873 में स्थापित सत्यशोधक समाज नामक सुधारवादी संस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संस्था का उद्देश्य सामाजिक समानता को बढ़ावा देना, निम्न जातियों को एकजुट करना और उनका उत्थान करना तथा जाति व्यवस्था के कारण उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक असमानता को दूर करना था। संस्था ने शिक्षा के महत्व पर भी बल दिया और लोगों को ब्राह्मण पुजारियों के बिना विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि तब तक केवल ब्राह्मण ही ऐसे समारोहों का संचालन करने के लिए अधिकृत थे। फुले ने सत्यशोधक विवाह की प्रथा शुरू की, जो बिना पुजारी या दहेज के आयोजित किया जाता था, जिसमें दंपत्ति शिक्षा और समानता के पक्ष में शपथ लेते थे।

ज्योतिराव फुले का निधन 1890 में हुआ और सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध जाकर उनकी चिता को अग्नि दी, क्योंकि सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार केवल पुरुषों द्वारा ही किया जाना चाहिए था। 1897 में प्लेग से अपनी मृत्यु तक वे सत्यशोधक समाज का नेतृत्व करती रहीं। उन्होंने क्षेत्र में प्लेग के प्रकोप के दौरान पीड़ितों के लिए एक क्लिनिक स्थापित किया था, लेकिन वे स्वयं इस बीमारी की चपेट में आ गईं।

हिमानी
डी.एल.एड प्रशिक्षु 2025

कलाकृतियां

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा बनाई गई कलाकृतियां

नीतू गुप्ता
डी.एल.एड प्रशिक्षु
2024

कविता सिंह डी.एल.एड प्रशिक्षु 2025

सुहानी डी.एल.एड प्रशिक्षु 2024

एक नजर

करेंट अफेयर्स

वर्तमान में कौन क्या है ?

1. भारत के 15वें प्रधानमंत्री - **श्री नरेंद्र मोदी**
2. भारत की 15वीं राष्ट्रपति - **महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू**
3. भारत के 15वें उपराष्ट्रपति - **सी पी राधाकृष्णन**
4. भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश **- न्यायमूर्ति सूर्यकांत**
5. भारत के 16वें महान्यायवादी - **आर वेंकटरामनी**
6. सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया - **तुषार मेहता**
7. नीति आयोग के अध्यक्ष - **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी**
8. नीति आयोग के सीईओ - **निधि छिब्बर**
9. नीति आयोग के उपाध्यक्ष - **अशोक कुमार लाहिड़ी**
10. आरबीआई के गवर्नर - **संजय मल्होत्रा**
11. राज्यसभा के सभापति - **सी पी राधाकृष्णन**
12. राज्यसभा के उपसभापति - **हरिवंश नारायण सिंह**
13. राज्यसभा में सदन के नेता - **जगत प्रकाश नड्डा**
14. राज्यसभा में विपक्ष के नेता - **मल्लिकार्जुन खड़गे**
15. 18वें लोकसभा अध्यक्ष - **ओम बिड़ला**
16. लोकसभा में विपक्ष के नेता - **राहुल गांधी**
17. 15वें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक - **संजयमूर्ति**
18. 26वें मुख्य चुनाव आयुक्त - **ज्ञानेश कुमार**
19. थल सेना के प्रमुख - **उपेंद्र द्विवेदी**
20. वायु सेना के प्रमुख - **अमरप्रीत सिंह**
21. नौसेना के प्रमुख - **कृष्ण स्वामीनाथन**
22. रिसर्च एंड एनालिसिस विंग(RAW) के अध्यक्ष - **पराग जैन**
23. इंटेलीजेंस ब्यूरो(IB) के अध्यक्ष - **तपन कुमार डेका**
24. केंद्रीय सतर्कता आयुक्त(CVC) - **प्रवीण कुमार श्रीवास्तव**
25. मुख्य सूचना आयुक्त - **राज कुमार गोयल**
26. भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के महानिदेशक- **विवेक भसीन**
27. विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक - **डॉ ए राजराजन**
28. भारत के कैबिनेट सचिव - **टी वी सोमनाथन**
29. प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव - **प्रमोद कुमार मिश्रा एवं शक्तिकांत दास**
30. भारत के विदेश सचिव - **विक्रम मिस्री**
31. इसरो के अध्यक्ष - **वी नारायणन**
32. डीआरडीओ के अध्यक्ष **- राजेश कुमार सिंह**
33. भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के महानिदेशक- **विवेक भसीन**
34. विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक - **डॉ ए राजराजन**
35. भारत के कैबिनेट सचिव - **टी वी सोमनाथन**
36. प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव - **प्रमोद कुमार मिश्रा एवं शक्तिकांत दास**
37. भारत के विदेश सचिव - **विक्रम मिस्री**
38. भारत के रक्षा सचिव - **राजेश कुमार सिंह**

भावी शिक्षकों ने चार्ट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से 'बाल विकास' के विभिन्न आयामों को किया रेखांकित

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में सत्र 2025-26 के प्रशिक्षुओं हेतु बाल विकास' (Child Development) विषय पर एक विशेष शैक्षिक गतिविधि का आयोजन किया गया। डॉ. फहमीना के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य भावी शिक्षकों में विषयगत समझ और संप्रेषण कौशल का विकास करना था। इस गतिविधि के अंतर्गत, प्रशिक्षुओं ने बाल विकास के क्षेत्र (Scope of Child Development) को चार्ट पेपर पर चित्रात्मक रूप (Pictorial Representation) में अत्यंत बारीकी के साथ प्रदर्शित किया। प्रशिक्षुओं ने न केवल इन सिद्धांतों का खाका तैयार किया, बल्कि डॉ. फहमीना के समक्ष अपनी प्रस्तुतियों का विश्लेषण करते हुए बाल विकास के विभिन्न चरणों और उनकी जटिलताओं की विस्तृत व्याख्या भी प्रस्तुत की। इस अवसर पर डॉ. फहमीना ने प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार किए गए चार्ट्स और उनकी प्रस्तुति शैली की सराहना की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, "शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में दृश्य-श्रव्य सामग्री (Teaching-Learning Material) और छात्रों का संवाद कौशल ही वास्तविक शिक्षण का आधार है। आज की गतिविधि ने विद्यार्थियों में न केवल रचनात्मकता को बढ़ावा दिया है, बल्कि उन्हें एक प्रभावी शिक्षक के रूप में अपने विचारों को स्पष्टता से रखने के लिए भी तैयार किया है।"इस कार्यक्रम में डायट प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया, जिससे संस्थान में एक सकारात्मक और अकादमिक वातावरण का संचार हुआ।

TLM प्रस्तुत करते प्रशिक्षु ।

अपशिष्ट सामग्री (Waste Material) से बनी शिक्षण सहायक सामग्री (TLM)

नीतू गुप्ता

डी.एल.एड प्रशिक्षु 2024

क्लास मैनेजमेंट हैक्स

1. ध्यान आकर्षित करने का संकेत :
कोई ताली पैटर्न या वाक्य रखें जैसे शिक्षक कहे
1 2 3 और छात्र जवाब दें , येस
2. सीटिंग प्लान: बातूनी छात्रों को अलग-अलग बैठने से व्यवधान काम हो सकता है
3 क्लासरूम नियम पोस्टर : नियमों को दीवार पर स्पष्ट रूप से लगाएं
4. थिंक, पेपर , शेयर: पहले छात्र स्वम सोचे फिर जोड़ी में चर्चा करें फिर पूरी कक्षाके साथ साझा करें
5. एक्जिट टिकट : क्लास के अंत में एक छोटा प्रश्न देकर समझने का आकलन करें
6. मूल्यांकन और फीडबैक - त्वरित पोल : हाथ उठाकर रंगीन कार्ड दिखाकर समझ की जांच करें
7. टू स्टार्ट एंड ए विश : दो अच्छी बातें और एक सुधार सुझाव दे
8. समय बचाने के हैक्स - तैयार टेंपलेट्स: बार-बार प्रयोग होने वाली वर्कशीट्स और घोषणाओं के टेंप्लेट रखना
9. बोर्ड का विभाजन :- होमवर्क उद्देश्य और महत्वपूर्ण नोटिस के लिए बोर्ड पर स्थाई सेक्शन बनाएं
10. सकारात्मक वातावरण - प्रशंसा बोर्ड , छात्रों की उपलब्धि को प्रदर्शित करें
11. छोटी जिम्मेदारियां - बोर्ड मॉनिटर सामग्री प्रबंधन आदि भूमिका देखकर छात्रों को शामिल करें

अंजुम बी

डी.एल.एड प्रशिक्षु 2025-27

प्रकृति

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

एक नजर

करेंट अफेयर्स

39. भारत के गृह सचिव - **गोविंद मोहन**

40.भारत के वित्त सचिव - **अजय सेठ**

41.भारत के राजस्व सचिव - **अरविंद श्रीवास्तव**

42.16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष - **अरविंद पनगढ़िया**

43. 8वें वेतन आयोग के अध्यक्ष - **रंजना प्रकाश देसाई**

44. महिला आयोग के अध्यक्ष - **विजया किशोर रहटकर**

45. पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष - **साध्वी निरंजन ज्योति**

46. अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष - **किशोर मकवाना**

47. अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष - **अंतर सिंह आर्य**

48. 23वे विधि आयोग के अध्यक्ष - **दिनेश माहेश्वरी**

49. अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष - **इकबाल सिंह लालपुरा**

50. कर्मचारी चयन आयोग(SSC) के अध्यक्ष - **गोपालकृष्णन**

51. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)के अध्यक्ष - **अजय कुमार**

52. मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष - **वी सुब्रमण्यन**

53. सेबी के अध्यक्ष - **तुहिन कांत पांडे**

54. लोकलेखा समिति के अध्यक्ष - **के सी वेणुगोपाल**

55. प्राक्कलन समिति के अध्यक्ष - **संजय जायसवाल**

56. सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के सचिव -**भरत खेरा**

57. याचिका समिति के अध्यक्ष - राघव चड्ढा

58. सी बी एस ई के अध्यक्ष - राहुल सिंह

59. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(UGC)के अध्यक्ष- **विनीतजोशी**

60. NCERT के निदेशक - **दिनेश प्रसाद सकलानी**

61. भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष - **पी टी उषा**

62. BCCI के अध्यक्ष - **मिथुन मनहास**

63. भारतीय मुक्केबाजी संघ के अध्यक्ष - **अजय सिंह**

64. भारतीय बैडमिंटन संघ के अध्यक्ष - **हिमंत विश्वा सरमा**

65. हॉकी इंडिया के अध्यक्ष - **दिलीप तिर्की**

66. भारतीय पैरालंपिक समिति के अध्यक्ष - **देवेंद्र झाझरिया**

67. अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष - **कल्याण चौबे**

68. टेबल टेनिस संघ के अध्यक्ष - **मेघना अहलावत**

69. तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष - **अर्जुन मुंडा**

70. कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष - **संजय सिंह**

71. पुरुष क्रिकेट टीम कोच - **गौतम गंभीर**

72. महिला क्रिकेट टीम कोच - **अमोल मजुमदार**

73. पुरुष हॉकी टीम कोच - **क्रग फुल्टन**

74. महिला हॉकी टीम कोच - **शेयर्ड मरीन**

75. पुरुष फुटबॉल टीम कोच - **खालिद जमील**

76. महिला फुटबॉल टीम कोच - **संतोष कश्यप**

सुप्रीत शर्मा

(डी एल एड 2025 बैच)

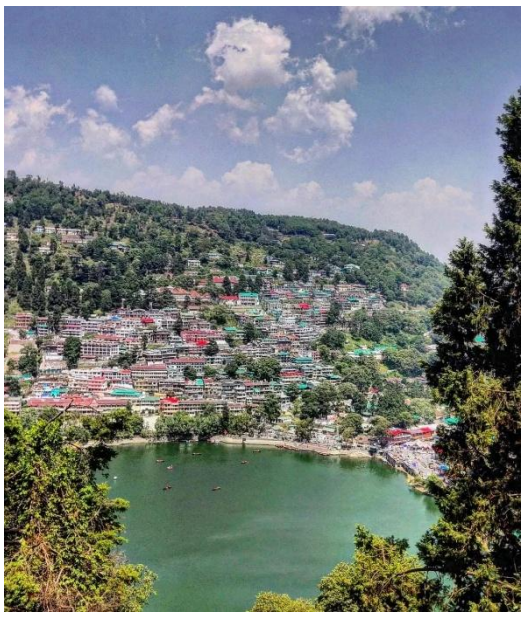

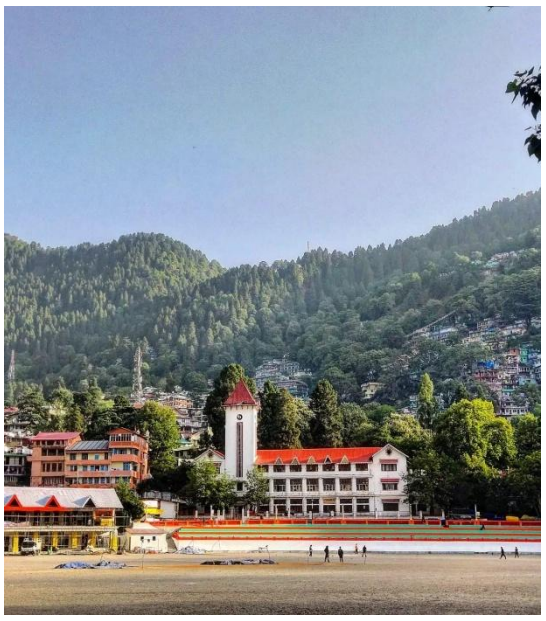

सौजन्य से मो सादान, डीएलडल 2025

सौजन्य से अंजुम बी, डीएलडल 2025

सौजन्य से मुस्कान गुप्ता, डीएलडल 2024

एक नजर

बरेली न्यूज

बरेली में शुरू हुआ UIDAI का नया आधार सेवा केंद्र

बरेली। अब सभी आधार सेवाएं मिलेगी एक ही छत के नीचे, आधार अपडेट से लेकर नए पंजीकरण तक बरेली और आसपास के नागरिकों के लिए राहत भरी खबर है। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) का पहला आधार सेवा केंद्र बरेली में सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। यह केंद्र डी-115 ए, गुलमोहर पार्क, संकल्प हॉस्पिटल के निकट, के.के. हॉस्पिटल रोड, राजेंद्र नगर, बरेली पर स्थित है।

केंद्र इंचार्ज के अनुसार आधार सेवा केंद्र में आधार से संबंधित सभी सेवाएं पूर्ण रूप से उपलब्ध हैं। नागरिक यहां नया आधार बनवाने के साथ-साथ आधार में पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी, फोटो तथा बायोमेट्रिक अपडेट करा सकते हैं। इसके अलावा नाम, जन्मतिथि और लिंग में संशोधन जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

प्रतिदिन बन सकेंगे 1500 आधार अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित यह केंद्र नागरिकों को बेहतर और व्यवस्थित सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। केंद्र का संचालन पासपोर्ट सेवा केंद्र की तर्ज पर किया जा रहा है, जहां प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग प्रशिक्षित कर्मचारियों की तैनाती की गई है। प्रतिदिन लगभग 1500 आधार संबंधी आवेदनों के निस्तारण की क्षमता के साथ यह केंद्र लोगों को त्वरित एवं सुगम सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। नागरिकों की सहायता के लिए हेल्पडेस्क की भी व्यवस्था की गई है।

सातों दिन खुला रहेगा आधार सेवा केंद्र

केंद्र पर आधार से संबंधित सेवाओं के लिए केवल UIDAI द्वारा निर्धारित शुल्क ही लिया जाता है, किसी प्रकार का अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाता, जिससे आमजन को पारदर्शी और विश्वसनीय सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। आधार सेवा केंद्र सप्ताह के सातों दिन खुला रहता है। आधार सेवा केंद्र के खुलने का समय सुबह 09:00 बजे से शाम 05:30 बजे तक निर्धारित किया गया है। नागरिक सुविधा के लिए UIDAI की वेबसाइट http://Ask1.uidai.gov.in से ऑनलाइन अपॉइंटमेंट भी बुक कर सकते हैं, जिससे उन्हें लंबी प्रतीक्षा से बचने में मदद मिलेगी। यह केंद्र क्षेत्र के लोगों के लिए आधार सेवाओं का एक महत्वपूर्ण और सुविधाजनक केंद्र बनकर उभरा है।

*वाराणसी का **मणिकर्णिका घाट** सनातन धर्म में सबसे पवित्र और ऐतिहासिक घाटों में से एक माना जाता है। इसे महाश्मशान भी कहा जाता है, जहाँ जीवन का अंतिम सत्य हैं। और मोक्ष एक साथ मिलते (मृत्यु)*

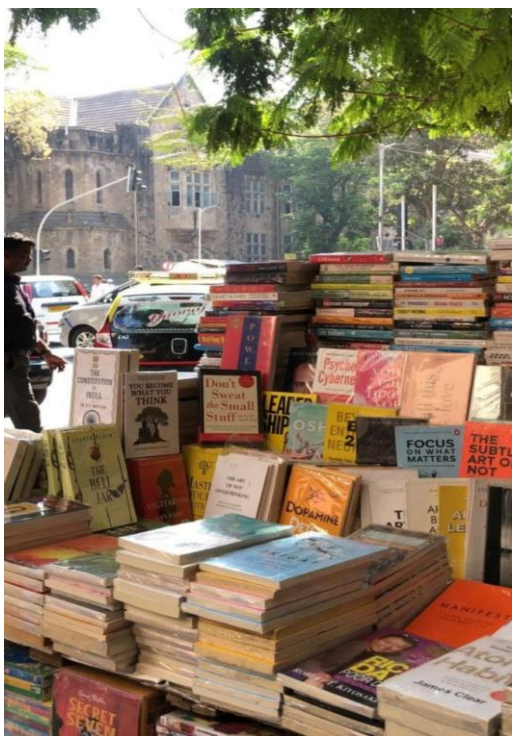

डी.एल.एड. प्रशिक्षु काजल द्वारा खीचीं गई मणिकर्णिका घाट की तस्वीरें।

आप भी प्रकृति प्रेमी है और आप के पास भी प्रकृति की सुन्दर तस्वीर है तो हमारी टीम के पास भेज सकते है।

स्पोर्ट्स

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

प्रेरणा, अभ्यास और अनुशासन: खेल की दुनिया में शिखर छूने का त्रिकोण।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट),फरीदपुर, बरेली में खेल गतिविधि का आयोजन, प्रशिक्षुओं ने दिखाया दम

बरेली। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं के सर्वांगीण विकास और मानसिक सतर्कता को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष खेल सत्र का आयोजन किया गया। प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित इस सत्र में सभी प्रशिक्षुओं ने पूरे जोश, उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा के साथ भाग लिया। यह सत्र न केवल मनोरंजन से भरपूर रहा, बल्कि इसने प्रशिक्षुओं के बीच टीम भावना (टीम वर्क) और आपसी समन्वय को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई। रोमांचक मुकाबलों में दिखा टीम वर्क इस खेल गतिविधि के दौरान मुख्य रूप से दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसने पूरे मैदान का माहौल उत्साह से भर दिया।

रस्साकशी (Tug of War): इस पारंपरिक खेल में प्रशिक्षुओं को अलग-अलग टीमों में विभाजित किया गया था। दोनों ही टीमों के सदस्यों ने अपनी शारीरिक क्षमता और रणनीतिक कौशल का परिचय देते हुए रस्सियों को अपनी ओर खींचने के लिए पूरा जोर लगा दिया। मैदान पर दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली, जिसने उपस्थित सभी लोगों में जबरदस्त जोश भर दिया।

सर्कल कप चैलेंज (गोले में कप डालना): यह प्रतियोगिता प्रशिक्षुओं की एकाग्रता, गति और फुर्ती को परखने के लिए आयोजित की गई थी। इस खेल का नियम था कि जो भी प्रतिभागी तय दूरी से सबसे पहले कप को गोले (सर्चल) के अंदर सही तरीके से डाल देगा, वह विजेता बनेगा। इस खेल में अपनी बारी का इंतजार और सबसे पहले कप डालने की होड़ ने माहौल को बेहद खुशनुमा और प्रतिस्पर्धी बना दिया।

मनोरंजन के साथ मिली टीम भावना की सीख सत्र के समापन पर प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा ने सभी प्रतिभागियों के प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से न केवल मानसिक तनाव दूर होता है, बल्कि जीवन और कार्यक्षेत्र में एक मजबूत टीम के रूप में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इस सफल आयोजन के बाद सभी प्रशिक्षुओं के चेहरों पर एक अलग ही चमक और नई ऊर्जा देखने को मिली।

स्वागत है दूसरे संस्करण में: Welcome to Second Edition!

नमस्ते साथियों! हमारे बुलेटिन के इस दूसरे अंक में आप सभी का स्वागत है। पिछले अंक में मिली आपकी शानदार प्रतिक्रिया के बाद, हम फिर से हाजिर हैं कुछ ज्ञानवर्धक तथ्यों और एक नए **'मिस्ट्री पर्सन'** के साथ। चलिए, आज के इस कॉलम की शुरुआत करते हैं!

1. कैंपस डिटेक्टिव: माइक के पीछे छुपा चेहरा!

The Profile File: #002

नियम एवं निर्देश:

नीचे दिए गए तीन संकेतों को ध्यान से पढ़ें और अंदाज़ा लगाएँ कि हमारे कॉलेज का यह कौन सा व्यक्तित्व (Personality) है। अपना सही जवाब नीचे दिए गए फॉर्म/क्यूआर कोड (QR Code) के माध्यम से सबमिट करें। सबसे पहले सही जवाब देने वाले 3 विजेताओं के नाम अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे!

संकेत 1: पढ़ाते समय सिर्फ सिलेबस नहीं, बल्कि महान लेखकों, कवियों और प्राचीन ग्रंथों के ढेरों रेफरेन्सेज (references) देना इनका सिग्नेचर स्टाइल है।

संकेत 2: कॉलेज के किसी भी इवेंट में जब ये माइक संभालते हैं, तो अपनी बुलंद आवाज़ और दमदार भाषण से पूरे हॉल में जोश भर देते हैं।

संकेत 3: 'सादा जीवन, उच्च विचार' के पक्के प्रतीक! स्वभाव से जितने सरल और सादगी पसंद हैं, अनुशासन (discipline) के मामले में उतने ही सख्त हैं।

जवाब कैसे दें? (Scan & Win!)

पर्ची पर नाम लिखकर जमा करने का पुराना तरीका अब भूल जाइए!

आगे दिए गए QR Code को अपने फ़ोन से स्कैन करें।

गूगल फॉर्म में अपना जवाब और नाम भरें।

सबसे पहले सही जवाब देने वाले को मिलेगा **'स्टार डिटेक्टिव'** का खिताब!

पिछली बुलेटिन के 'स्टार डिटेक्टिव' है

1. **ख़ुशी**
2. **वैष्णवी भरद्वाज**
3. **इम्तियाज़ अहमद**

STAR DETECTIVE

♂ क्या आप जानते हैं? (स्वास्थ्य और पर्यावरण विशेष)

स्वस्थ जीवन ही हमारी असली पूँजी है। आइए, इस अंक में स्वास्थ्य और पर्यावरण से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों को जानते हैं:

🌿 **जीवनदायिनी वृक्ष:** एक परिपक्व पेड़ प्रतिवर्ष लगभग 118 किलोग्राम ऑक्सीजन प्रदान कर सकता है, जो कई मनुष्यों के लिए पर्याप्त है।

💧 **अमूल्य जल:** पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का केवल 1% हिस्सा ही पीने योग्य है, इसलिए जल संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

🌍 **कार्बन का अवशोषण:** एक स्वस्थ पेड़ अपने जीवनकाल में हजारों किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वातावरण को शुद्ध रखता है।

🌍 **प्लास्टिक का दुष्प्रभाव:** प्लास्टिक को पूरी तरह नष्ट होने में सैकड़ों वर्ष लग सकते हैं; पर्यावरण को बचाने के लिए इसका उपयोग कम करना अनिवार्य है।

🚶 **स्वस्थ हृदय:** प्रतिदिन मात्र 30 मिनट की पैदल चाल हृदय रोग के खतरे को कम करती है और पूरे शरीर की कार्यक्षमता को बढ़ाती है।

हमारी लीलौर झील - महाभारत काल से पर्यटन तक का सफर

बरेली। जिले की आंवला तहसील में रामनगर के पास स्थित लीलौर झील हमारे क्षेत्र का एक अनमोल ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर है। इसे महाभारत कालीन यक्ष सरोवर कहा जाता है। यह मान्यता कि यहीं पांडवों और यक्ष का प्रसिद्ध संवाद हुआ था। पहले यह झील उपेक्षा की शिकार थी, लेकिन अब यह नए रूप में निखर रही है।

लीलौर झील फोटो ।

ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व लीलौर झील का उल्लेख महाभारत में मिलता है । झील के किनारे स्थित अलखेश्वर महादेव शिव मंदिर में हर साल बडे धार्मिक आयोजन होते हैं । हाल ही में महंत नर्मदादास महात्यागी की समाधि के समय हरिद्वार से आए संतों और हजारों ग्रामीणों ने यहाँ दर्शन किए।

नया विकास और पर्यटन सुविधाएं पिछले महीनों में लीलौर झील का कायाकल्प हुआ है। प्रशासन ने यहां पर्यटकों लिए कई सुविधाएं शुरु की हैं,जैसे: नौका विहार, फैमली टॉय, ट्रेन, गेस्ट हाउस और कैफेटेरिया,ई-बस सेवा आदि।

भविष्य की योजना जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने कहा कि लीलौर झील का विकास नैनीताल की झील की तर्ज पर किया जाएगा। लीलौर झील अब सिर्फ एक तालाब नहीं,बल्कि बरेली मंडल का एक मुख्य पर्यटन केंद्र बन रही है।

शाहनूर
डी.एल.एड 2025

शहर की ऐतिहासिक विरासत: नवाब साहब की कोठी

बरेली। हर के चक महमूद इलाके में स्थित नवाब साहब की कोठी आज भी लोगों की उत्कंठा जगाती है। इसके विशाल द्वार के सामने से गुजरते हुए बरबस ही निगाहें भीतर कोठी की भव्यता देखने को उत्सुक हो उठती हैं पर सबके हाथ निराशा ही लगती है क्योंकि करीब 15 हजार वर्ग गज क्षेत्रफल में बनी कोठी के चारों ओर बनी चारदीवारी के भीतर देख पाना संभव नहीं। जब तक आप 30 फीट ऊंचे मुख्य द्वार के भीतर दाखिल न हों, इस कोठी की भव्यता का अंदाजा भी नहीं लगा सकते। कोठी में घुसते ही भीतर का नजारा देखकर लगता है मानो बीता हुआ शानदार कल सामने आकर ठहर गया हो।

नवाब साहब की कोठी की फोटो ।

अफगानिस्तान से मंगवाया था काला पत्थर:

कोठी के मुख्य हॉल और डायनिंग हॉल में सफेद और काला पत्थर लगा है। बताते हैं कि यह पत्थर उस समय सिर्फ अफगानिस्तान में मिलता था। चूंकि नवाब सरताज वली खां का परिवार मूलरूप से अफगानिस्तान के सीमावर्ती इलाके का निवासी था, इसलिए उन्होंने अफगानिस्तान से ही यह काला पत्थर विशेष तौर पर मंगवाया। इसकी चमक आज भी वैसी ही है, जैसे की कोठी निर्माण के समय थी।

ब्रिटिश आर्किटेक्चर के साथ मुगल शिल्प:

वर्ष 1880 में नवाब शहादत वली खां ने इस कोठी की नींव रखी। इनके बेटे शहंशाह वली खां ने 1912 में इस आलीशान कोठी की तामीर का काम पूरा कराया। शहंशाह वली खां के पौत्र और नवाब सरताज वली खां के बेटे मोअज्जम सरताज उर्फ गुड्डू जो इस कोठी के सरपरस्त हैं, बताते हैं कि पूरी कोठी सुर्खी-चूने से बनी है। पूरी कोठी बनने में 30 साल से अधिक का वक्त लगा। कोठी का निर्माण उस दौर के मशहूर कारीगर अल्लाह बख्श ने किया। उन्होंने बताया कि अल्लाह बख्श और उनके भाइयों ने शहर की अन्य आलीशान कोठियों की भी तामीर की। कोठी के वास्तुशिल्प में ब्रिटिश आर्किटेक्चर और मुगलिया शिल्प कला का अद्भुत मेल दिखता है।

देशभक्ति और सांप्रदायिक सौहार्द की प्रतीक है कोठी:

चक महमूद स्थित नवाब साहब की कोठी सिर्फ नवाब साहब के परिवार का आशियाना मात्र ही नहीं है, बल्कि यह देशभक्ति संग सांप्रदायिक सौहार्द का भी प्रतीक है। मोअज्जम बताते हैं कि उनके वालिद सरताज वली खां के समय में कोठी में 26 जनवरी और 15 अगस्त को कार्यक्रम होते थे। ध्वजारोहण भी होता था। इसके लिए कोठी के बगीचे में अलग से स्थान बना हुआ है। जिसमें शहर के तमाम जनप्रतिनिधि भी शिरकत करते थे। इसके साथ ही होली पर होली मिलाप भी होता था।

अफगानिस्तान से आकर बसा था नवाब साहब का परिवार:

मोअज्जम सरताज बताते हैं कि उनके पूर्वज शायब वली खां अफगानी घोड़ों के बड़े व्यवसायी थे जो अफगानिस्तान से घोड़े लाकर यहां बेचते थे। वह सन् 1830 के शुरुआती वर्षों में यहां आते थे। उनका निकाह महमूद खां की बेटी से हुआ, जिसके बाद वह यहां आकर बस गए। उनके दो बेटे उमराव और सरदार वली खां हुए। शायब वली खां ने अपने दोनों बेटों के साथ अंग्रेजों के खिलाफ 1857 की लड़ाई में हिस्सा लिया, जिसमें शायब वली और उमराव वली को अंग्रेजों ने पकड़ लिया और उन्हें काला पानी की सजा दी, जबकि सरदार वली खां फरार हो गए। वह नवाबगंज के पास अधकटा गांव जाकर छिपे। सन 1916 में अंग्रेजों ने उन्हें भी ढूंढ निकाला और अधकटा गांव में ही फांसी की सजा दी। स्वतंत्रता संग्राम में इस परिवार का योगदान लोग आज भी याद करते हैं। आज भी यह कोठी शहर की शान बनी हुई है।

हिमानी
डी.एल.एड 2025

वसीम बरेलवी भारत के प्रसिद्ध उर्दू शायर हैं बरेली की शान, उर्दू अदब की पहचान।

बरेली। वसीम बरेलवी का जन्म 8 फ़रवरी 1940 को बरेली, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनका वास्तविक नाम ज़ाहिद हुसैन है। उन्होंने उर्दू साहित्य को अपनी बेहतरीन ग़ज़लों और शायरी से समृद्ध बनाया है। उनकी रचनाओं में प्रेम, इंसानियत, भाईचारा और जीवन के अनुभवों का सुंदर चित्रण मिलता है। वे देश-विदेश के मुशायरों में अपनी शायरी के लिए प्रसिद्ध हैं और बरेली की साहित्यिक पहचान माने जाते हैं। प्रमुख योगदान प्रसिद्ध उर्दू शायर, अनेक लोकप्रिय ग़ज़लों के रचनाकार, उर्दू भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुशायरों में सहभागिता, प्रसिद्ध शेर

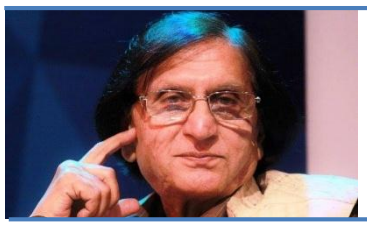

वसीम बरेलवी की फोटो ।

- हादसों की ज़द पे हैं तो मुस्कुराना छोड़ दें, ज़लज़लों के ख़ौफ़ से क्या घर बनाना छोड़ दें।
- आसमाँ इतनी बुलंदी पे जो इतराता है
  भूल जाता है ज़मीं से ही नज़र आता है।

"जहाँ रहेगा वहीं रौशनी लुटाएगा,
किसी चराग़ का अपना मकाँ नहीं होता।"

तय्यबा
डी.एल.एड 2025

बरेली कॉलेज गेट पर बनाया जाएगा स्मार्ट वेडिंग जोन

बरेली - नगर निगम, बरेली कॉलेज गेट और श्यामगंज पुल के नीचे एक नया स्मार्ट वेंडिंग जोन बनाने जा रहा है।

बरेली। सड़क-फुटपाथ जल्द ही अतिक्रमण से मुक्त होंगे। नगर निगम ने पुलिस व अन्य विभागों के साथ समन्वय बनाकर अभियान चलाने की बात कही है। इसके लिए संबंधित क्षेत्र के अवर अभियंता-सफाई निरीक्षकों का भी सहयोग लिया जाएगा। साथ ही पहले से संचालित सेटेलाइट, चौपुला, किला समेत अन्य वेडिंग जोन को भी अपडेट किया जाएगा, जिससे की स्ट्रीट वेंडरों को अधिक से अधिक संख्या में समाहित किया जा सके।इसके साथ ही बरेली कालेज गेट-श्यामगंज पुल के नीचे के हिस्से में एक और स्मार्ट वेंडिंग जोन बनाने का निर्णय लिया गया है।

विज्ञान/प्राद्योगिकी

फरीदपुर, बरेली। जून 2026

नई रिसर्च: स्मार्ट कोटिंग वाले बीजों से उपज में 30% बढ़ोतरी

हैदराबाद। भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के कृषि वैज्ञानिकों ने बीजों की स्मार्ट कोटिंग तकनीक विकसित की है। यह तकनीक बीजों की गुणवत्ता, अंकुरण क्षमता और फसल की स्थापना को बेहतर बनाकर उत्पादन बढ़ाने में मदद करती है। पेटेंट प्राप्त इस तकनीक में जैव-अपघटनीय बायो-पॉलिमर की विशेष परत बीजों पर चढ़ाई जाती है, जिसमें लाभकारी सूक्ष्मजीव, पोषक तत्व और पौधों की वृद्धि बढ़ाने वाले तत्व शामिल हैं। इससे बीज तेजी से अंकुरित होते हैं, जड़ों का विकास मजबूत होता है और पौधे सूखा, नमी की कमी तथा अन्य प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों का बेहतर सामना कर पाते हैं। "स्मार्ट सीड कोटिंग तकनीक के उपयोग से मूंगफली और सोयाबीन की उपज में 30% तक वृद्धि दर्ज की गई।

वहीं, सोयाबीन, मक्का, चना, कपास, सरसों और अरहर सहित कई फसलों पर किए गए परीक्षणों में 12-37% तक अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ। अनियमित बारिश वाले क्षेत्रों में यह तकनीक फसल उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी हो सकती है।

अनुज सिंह

(डी.एल.एड 2025)

NESCOD टेक्नॉलोजी: बिना बिजली के सस्टेनेबल कूलिंग का नया समाधान

NESCOD (No Electricity Sustainable Cooling On Demand) एक आधुनिक कूलिंग टेक्नॉलोजी है, जिसे कम ऊर्जा या बिना बिजली के शीतलन (कूलिंग) प्रदान करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। यह तकनीक थर्मोडायनेमिक साइकिल और एंडोथर्मिक रिएक्शन के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें विशेष साल्ट सल्यूशन के उपयोग से तापमान को कम किया जाता है। इसमें अमोनियम नाइट्रेट जैसे पदार्थ पानी में घुलकर गर्मी को अवशोषित करते हैं, जिससे आसपास का तापमान कम होता है। NESCOD तकनीक पारंपरिक एयर कंडीश्नर का एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प बन सकती है। इसका उपयोग गर्म क्षेत्रों, ऊर्जा की कमी वाले स्थानों और सस्टेनेबल कूलिंग सॉल्यूशंस के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

शिवांग शर्मा

डी.एल.एड 2025

रीजेनरेटिव ब्रेकिंग (पुनर्योजी ब्रेक प्रणाली) एक आधुनिक ऊर्जा पुनर्प्राप्ति तकनीक

ईवी (EV) वाहनों में रीजेनरेटिव ब्रेकिंग ऊर्जा बचत की स्मार्ट तकनीकरीजेनरेटिव ब्रेकिंग एक उन्नत तकनीक है जिसका उपयोग इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) में किया जाता है। यह तकनीक वाहन की गति धीमी या बंद करते समय नष्ट होने वाली ऊर्जा को पुनः उपयोगी बनाती है। जब चालक ब्रेक लगाता है, तो विद्युत मोटर जनित्र (जनरेटर) के रूप में कार्य करती है और वाहन की गतिज ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदल देती है। यह ऊर्जा बैटरी में संग्रहित हो जाती है, जिससे वाहन की दूरी क्षमता (रेंज) बढ़ती है और ऊर्जा की खपत कम होती है। पारंपरिक वाहनों में यह ऊर्जा गर्मी के रूप में नष्ट हो जाती है, जबकि ईवी में यह प्रणाली दक्षता बढ़ाकर पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद

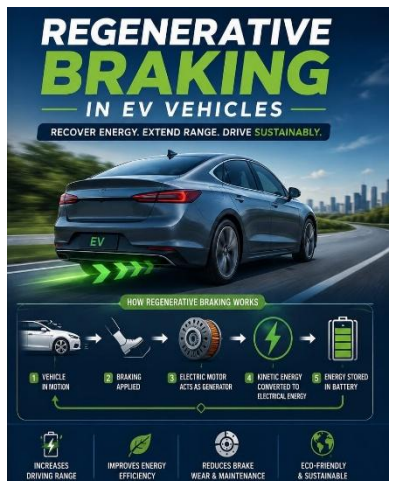

फायदेमंद है। रीजेनरेटिव ब्रेकिंग न केवल ऊर्जा है।

शिवांग शर्मा

डी.एल.एड 2025

चंद्रमा पर पानी के नए सबूत: भारत के चंद्रयान-2 ऑर्बिटर के रडार डेटा से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंधेरे गड्ढों (craters) के नीचे भारी मात्रा में बर्फ (subsurface water ice) होने के पुख्ता सबूत मिले हैं।

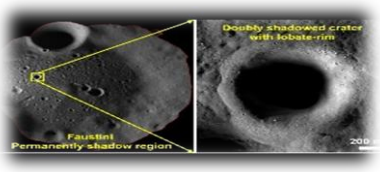

गहरे समुद्र में नई प्रजातियां: ओशन सेंसस (Ocean Census) अभियान के दौरान समुद्र की गहराइयों में 1,100 से अधिक नई प्रजातियों की पहचान की गई। इसमें एक अनोखी 'घोस्ट शार्क' और न्यूरोसाइंस में काम आने वाला एक विशेष रिबन वॉर्म शामिल है।

अनमोल

डी.एल.एड 2025

2025 प्रथम सेमेस्टर–डी.एल.एड बाल विकास प्रश्न पत्र (Mcqs)

1. मैकडूगल के अनुसार मूल प्रवृत्तियों की संख्या होती है-
(1) पांच (2) आठ
(3) दस (4) चौदह

2. बुद्धि के द्वि खण्ड सिद्धान्त का अंग है-
(1) सामाजिक योग्यता (2) विशिष्ट बुद्धि
(3) वाचिक योग्यता (4) रुचि

3. "बाल विकास का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बाल व्यवहार से है।" परिभाषा किस मनोवैज्ञानिक ने दी है-
(1) गैरिसन (2) कुक
(3) स्किनर (4) वुडवर्थ

4. भारत में प्रथम मनोविज्ञानशाला की स्थापना कहाँ हुई थी-
(1) पश्चिम बंगाल (2) उत्तर प्रदेश
(3) बिहार (4) उड़ीसा

5. सी.ए.टी. (C.A.T.) किस प्रकार का व्यक्तित्व परीक्षण है-
(1) आत्मनिष्ठ (2) वस्तुनिष्ठ
(3) प्रक्षेपी (4) प्रश्नावली

6. सीखने के नियम का प्रतिपादन किया-
(1) थार्नडाइक (2) स्किनर
(3) टॉलमैन (4) कोहलर

7. क्रिया-प्रसूत अधिगम सिद्धान्त का प्रयोग किया गया-
(1) वनमानुष (2) कुत्ता
(3) चूहा (4) बिल्ली

8. समान्तर माध्य का प्रतीक है-
(1) $\overline{X}$ (2) S
(3) X (4) Z

9. 130 **I.Q.** वाला बालक कहलाता है-
(1) उत्कृष्ट (2) सामान्य
(3) प्रतिभाशाली (4) मूर्ख

10. डीवी के अनुसार तर्क के सोपान हैं-
(1) चार (2) तीन
(3) दो (4) पाँच

11. "समान, समान को ही जन्म देता है।" नियम है-
(1) प्रत्यागमन का नियम (2) जैव सांख्यिकी का नियम
(3) समानता का नियम (4) विभिन्नता का नियम

12. 'प्रबलन सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया-
(1) हल ने (2) स्किनर ने
(3) गुथरी ने (4) टालमैन ने

13. अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त हैं-
(1) मानसिक शक्तियों का सिद्धान्त
(2) समान तत्वों का सिद्धान्त
(3) सामान्यीकरण का सिद्धान्त
(4) उपर्युक्त सभी

14. स्मृति का अंग नहीं है-
(1) सीखना (2) धारणा
(3) चिन्तन (4) पहचान

15. विभिन्न तथ्यों के बीच किसी एक ही तथ्य पर मन को एकाग्र किये रहना कहलाता है-
(1) अभ्यासन् (2) ध्यान लगाना
(3) प्रत्यभिज्ञा (4) प्रस्मरण

उत्तर कुंजी

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
1.	4
2.	2
3.	1
4.	2
5.	3
6.	1
7.	3
8.	1
9.	3
10.	4
11.	3
12	1
13.	4
14.	3
15.	2

डाएट बुलेटिन

बुलेटिन टीम

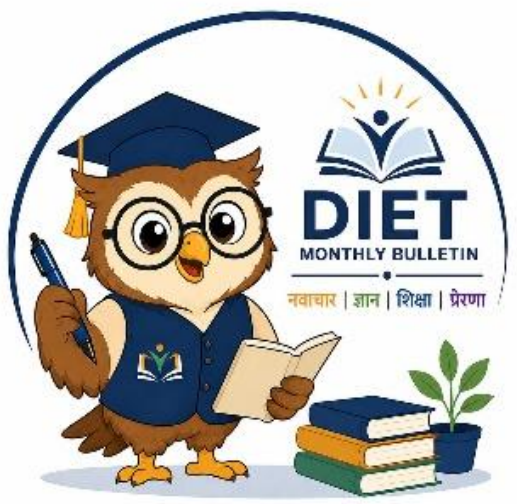

- **मुख्य संरक्षक:**

  श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा, अपर मुख्य सचिव, वित्त, माध्यमिक शिक्षा एवं बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।

- **प्रेरणा:**

  श्रीमती मोनिका रानी, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा / राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

- **मार्गदर्शक:**

  श्री गणेश कुमार, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

- **प्रोत्साहन:**

  डॉ० पवन कुमार, संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

- **निर्देशन:**

  श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, प्राचार्य, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।

- **सहयोग:**

  श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।

- **संपादक एवं समन्वय:**

  डॉ फ़हमीना, प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।

- **संपादकीय मंडल–**

  श्री कृष्ण कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्रीमती अर्चना, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्री श्रीकान्त मिश्रा, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  डॉ0 रूबी, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्रीमती वंदना सहाय , प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

- **प्रशिक्षु समन्वयक एवं डिजिटल सपोर्ट टीम –**

अरबाब रजा खां, प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

कविता सिंह, प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

- **प्रशिक्षु संपादकीय मंडल टीम –**

मो सादान

शिवंम

कृतिका तिवारी

अनु तोमर

अनुज सिंह

आदर्श शर्मा

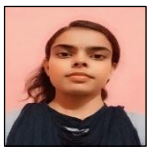
हिमानी

गुरजीत सिंह

सानिया अंसारी

तय्यबा

विशाखा

गुनगुन

शाहनूर

आयुषी

अन्शु

अंजुम बी

सताक्षी गंगवार

रानी यादव

खुशी